International Journal of Advanced Educational Research
www.educationjournal.org
ISSN: 2455-6157
Received: 19-07-2021; Accepted: 03-08-2021; Published: 19-08-2021
Volume 6; Issue 4; 2021; Page No. 29-33

वर्तमान समय में शांति शिक्षा की आवश्यकता

Dr. Subhash Singh
Associate Professor, Department of Education, Ranvir Rananjay Snatkottar Mahavidyalay, Amethi, Uttar Pradesh, India

सारांश
भारतीय शिक्षा का इतिहास अति प्राचीन है। वैदिक काल से लेकर आज तक भारतीय शिक्षा निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर रही है। समय के साथ परिवर्तित हो रही सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन तथा संशोधन किया जाता रहा है। वर्तमान में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक ही सीमित नहीं रहा वरन् शिक्षा राष्ट्रीय विकास की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुकी है। वर्तमान में शिक्षा का सर्वप्रमुख कार्य मानव संसाधनों का यथोचित् विकास करना है। इस दृष्टि से देखा जाए तो आज शिक्षा के द्वार पर अनेक नूतन प्रवृत्तियाँ दस्तक दे रही है, जिन्हें शीघ्र आत्मसात् करना परम आवश्यक हो गया है। वस्तुतः परिवर्तन की माँग के अनुरूप आधुनिक, प्रगतिशील तथा विश्वव्यापी दृष्टिकोण अपनाकर ही भारतीय शिक्षा अपने स्वरूप गुणवत्ता और अस्तित्व को बनाये रखने में सफल हो सकती है। इस परिप्रेक्ष्य में मानवाधिकार शिक्षा, शान्ति शिक्षा, समावेशी शिक्षा, महिला सशक्तिकरण हेतु शिक्षा, निजीकरण व वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा आदि अनेकानेक नूतन प्रकरण शिक्षा के क्षेत्र में चर्चित मुद्दे बन गए है। इस परिप्रेक्ष्य में भारतीय शिक्षा प्रणाली में आ रही नूतन प्रवृत्तियों व नवाचारों का स्वागत करना स्वाभाविक है। इधर कुछ समय से मानव समाज में बढ़ती अशान्ति, विवाद व कलह के फलस्वरूप विगत कुछ समय से शान्ति शिक्षा की माँग बढ़ रही है। निःसन्देह शिक्षा के माध्यम से शान्ति स्थापित करने के लक्ष्य की पूर्ति सरलता से की जा सकती है। आज बच्चों को ऐसी शिक्षा देने की आवश्यकता है जिससे उसमें आतंकवाद, हिंसा, विद्वेष, जैसी अवांछनीय घटनाओं के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो तथा परस्पर सौहार्द, सह–आस्तित्व, सहयोग, सहिष्णुता भाईचारा जैसे सकारात्मक गुण विकसित हो सके। संक्षेप में शान्ति शिक्षा नैतिक विकास के साथ उन मूल्यों और दृष्टिकोण के पोषण पर बल देती है जो प्रकृति और मानव जगत् के बीच सामंजस्य स्थापित करने के लिए आवश्यक है।

मूलशब्दः वर्तमान समय, शांति शिक्षा

प्रस्तावना
शांति शिक्षा से अभिप्राय ऐसी शिक्षा से है जो व्यक्तियों में ऐसे मूल्यों, कौशलों, अभिवृत्तियों का समावेश करे जिससे उन्हें दूसरों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार रखने वाले एवं उत्तरदायी नागरिक बनने में मदद मिले। ऐतिहासिक दृष्टि से नैतिक शिक्षा एवं मूल्य शिक्षा शांति शिक्षा के लिए पूर्वज है या दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि ये शांति शिक्षा के लिए आधार है। शांति शिक्षा मूल्यों के उद्देश्यों को ठोस रूप देती है और उनके आंतरीकरण को प्रेरित करती है। शांति के लिए शिक्षा को ऐसे ज्ञान, कौशल, मूल्यों एवं अभिरुचि का पोषण करना होता है जिससे शांति की संस्कृति निर्मित होती है। अंहिसक तरीके से द्वन्द्वों का समाधान करने वाले अमनपसंद लोग तैयार करना इसकी एक दीर्घकालिक उद्देश्य/रणनीति है। शांति शिक्षा समग्रतामूलक है। मानवीय मूल्यों के एक ढाँचे के भीतर बच्चों का भौतिक, भावनात्मक, बौद्धिक और सामाजिक विकास इसके दायरे/परिधि में आता है। संक्षेप में शांति शिक्षा के समग्र रूप के दो निहितार्थ है–

- लोगों को हिंसा का मार्ग चुनने के बजाय शांति का मार्ग चुनने में सशक्त बनाना।
- उन्हें शांति का उपभोक्ता बनने के बजाय उसका सर्जक बनाना।

इस प्रकार शांति शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति का समग्र विकास है। शांति शिक्षा प्यार, सत्य, न्याय, समानता, सहनशीलता, सौहार्द, विनम्रता , एकजुटता और आत्मसंयम इन सारे मूल्यों को व्यवहार में लाने पर बल देती है। शांति शिक्षा के आधार के रूप में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा जहाँ एक ओर धर्म के विषय में उसकी बुनियाद और उनमें अर्न्तनिहित मूल्यों के विषय में जानने तथा सही समझ के लिए प्रेरित करती है, वहीं दूसरी ओर नैतिक शिक्षा मानव के आचार विचार व्यवहार को सकारात्मक दिशा में ले जाने में सहयोग देती है। अत्यन्त आवश्यक मूल्यों के क्षरण और समाज में बढ़ती कटुता को देखते हुए शांति शिक्षा को एक सामाजिक और नैतिक मूल्यों का संवर्द्धन करने वाले एक 'ताकतवर औजार'/'सशक्त उपकरण' के रूप में प्रयोग करने की वकालत की जा रही है। अतःएव शिक्षा के एक पाठ्यक्रम के रूप में शांति शिक्षा उन सार्वभौमिक और शाश्वत मूल्यों का पोषण करें जो हमारे लोगों को विविधता में एकता और अखण्डता की दिशा में ले सके।

शांति के लिए शिक्षा
शांति अभिमुख व्यक्तित्व निर्माण वर्तमान की एक प्रमुख आवश्यकता है। शिक्षा के अन्तर्गत शांति अभिमुख व्यक्तित्व निर्माण के घटक है– अपनी और अपने परिवेश की साफ–सफाई, दूसरों और बड़ों के लिए सम्मान, श्रम की कद्र, ईमानदारी प्यार, साझेदारी, और सहकारिता, सहनशीलता, नियमितता, समय की पांबदी, उत्तरदायित्व आदि। वास्तव में सभी बच्चे स्वभावतः प्रेम करने वाले और दयालू होते है, साथ ही इससे भिन्न होने की क्षमता भी उनके अन्दर (भीतर) विद्यमान होती है। इसलिए उनके भीतर जो कुछ भी रचनात्मक या सृजनात्मक है उसे पुष्ट परिष्कृत और संवर्धित करने की आवश्यकता है। इसके साथ ही उनके भीतर हिंसात्मक प्रवृतियों को पनपने से पहले उसकी रोकथाम करना भी आवश्यक है। प्राथमिक स्तर पर बच्चों में शांति शिक्षा के अन्तर्गत इसका उद्देश्य बच्चों को प्रकृति की विविधता, सुन्दरता और सामंजस्य का आनन्द उठाने में मद्द करना। उन्हें ऐसे कौशल विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जो दूसरों के साथ सहज रहने के लिए आवश्यक है। (विशेषतः सुनने की कला) और प्रकृति के साथ सहज रहने के लिए आवश्यक है– सौन्दर्य मूलक संवेदनशीलता

तथा उत्तरदायित्व का बोध। जैसे–जैसे बच्चे बड़े होते है और माध्यमिक विद्यालयों के चरण तक पहुँचते है वे अमूर्त विचारों को ग्रहण करने लगते है तथा साथ ही सीमित रूप में अपने आस–पास होने वालों विभिन्न घटनाओं पर तर्कसंगत और सम्बंधमूलक विधि से सोचने की क्षमता विकसित कर लेते है। चूंकि विद्यालय ऐसी जगह है जहाँ विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक और क्षेत्रीय पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चे एक जगह इकट्ठा होते है, इसलिए विद्यार्थियों को लोकतन्त्र, समानता, न्याय, स्वतन्त्रता, गरिमा और मानवाधिकार में निहित मूल्यों को समझने की संज्ञानात्मक क्षमता से लैस होने की आवश्यकता है। अतः उन्हें सांस्कृतिक बहुलता के प्रति सकारात्मक सोच एवं शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के महत्व को समझने की आवश्यकता है।

शांति के लिए शिक्षा की आवश्यकता इस सन्दर्भ में भी है वे सम्यक् ढंग से सूचना से व्यवहार करने, रचनात्मक, तथा स्वचिंतन और स्वानुशासन के कौशलों का विकास करें। ये कौशल उन्हें समर्थ बनाएंगे कि वे समूह में भागीदारी कर सके, दूसरों के साथ जिम्मेदारी से सम्बन्ध बना सके और समझ के साथ द्वन्द्वों का निपटारा कर सके। इसके साथ ही लिंग, जाति, श्रेणी और धर्म पर आधारित सम्प्रदायवाद और भेदभाव जैसे हिंसा के रूपों के प्रति एक सूचित नकारात्मक रवैया विकसित कर सके। इसके लिए उनमें ऐसी समझ के विकास की जरूरत है ताकि वे परिपक्वता के साथ भष्ट्राचार, भ्रमित करने वाले विज्ञापनों तथा मीडिया द्वारा जो भी हिंसक और अस्वथ्यकर दिखाया जा रहा है उसे सम्बोधित कर सके।

इन सबमें ज्यादा जरूरी है कि उन्हें समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतन्त्र के उत्तरदायी नागरिक बनने को मूल अवधारणा में शिक्षित करना। वास्तव में नागरिकता लोकतन्त्र का सार है और यह नहीं हो सकता कि हम नागरिकों को संविधान के मूल्यों और दृष्टिकोण से अनभिज्ञ रखे तथा फिर उनसे जिम्मेदार नागरिक बनने की आस लगाये। अतः शांति के लिए शिक्षा का असल उद्देश्य तथा आवश्यकता बच्चों, युवाओं को नागरिकता सम्बन्धी कर्त्तव्यों को ठीक से निभाने की शिक्षा व प्रशिक्षण देना। निष्कर्षतः हम कह सकते है कि शिक्षा व्यक्तित्व के निर्माण का आधार है। प्रारम्भिक शिक्षा मानव जीवन का मूलाधार है, माध्यमिक शिक्षा तना है तथा उच्च शिक्षा जीवन का विकासात्मक प्रसार है। मानव व्यक्ति को शिक्षित करने का तात्पर्य है, दिशा देना। हम बच्चों को या तो शांति की दिशा में ले जा सकते है या उससे उल्टी दिशा में। शांति के लिए शिक्षा की वर्तमान आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि शिक्षा को शांति के लिए शिक्षा मानवीय बना सकती हैः शिक्षित होने का मतलब है पूर्णतः मानव होना। समुदाय में रहने की जरूरत हमारी मानवता के लिए बुनियादी आधार है। इसलिए दूसरों के साथ सामंजस्यपूर्वक जीने का कौशल विकसित करना शिक्षा के सार में निहित है।

शान्ति शिक्षा में भारतीय जीवन मूल्य

मानव अपने भौतिक तथा सामाजिक वातावरण के साथ अपने समायोजन की प्रक्रिया में तरह–तरह के अनुभव प्राप्त करता है तथा अपने इन विभिन्न प्रकार के अनुभवों के आधार पर जीवन के कुछ सामान्य सिद्धान्त विकसित करता है। व्यक्ति द्वारा अपने लिए निर्धारित जीवन के इन सामान्य सिद्धान्तों को ही मूल्यों के नाम से पुकारा जाता है। मूल्य वास्तव में मानव के व्यक्तित्व का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष प्रतिबिम्बित करते है। जब हम शिक्षा की बात करते है तो सामान्य अर्थों में यह समझा जाता है कि इसमें हमें वस्तुगत ज्ञान प्राप्त होता है तथा जिसके बल पर हमें कोई रोजगार प्राप्त कर सकते है। वस्तुपरक शिक्षा हर क्षेत्र में उपयोगी है। परन्तु जीवन में केवल पदार्थ ही महत्वपूर्ण नहीं है। पदार्थों का अध्ययन आवश्यक है, राष्ट्र की भौतिक दशा सुधारने के लिए, जीवन मूल्यों का उपयोग हम राष्ट्र की उन्नति के लिए कर सकते हैं।

मूल्य और शिक्षा में बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। मूल्यों का सम्बन्ध उन चीजों से होता, जिसकी हम कामना करते है या इच्छा करते हैं और उचित मानते हैं। जबकि शिक्षा एक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से बच्चों में ऐसे विशेष गुणों, दृष्टिकोणों, मूल्यों तथा व्यवहार का विकास होता है जो सार्वभौमिक दृष्टि से हितकारी हो। अतः मूल्य और शिक्षा में साध्य एवं साधन का, सिद्धान्त एवं व्यवहार का, सम्बन्ध होता है। मूल्य आत्मा के समान होता है तो शिक्षा शरीर के समान है। मूल्यों का विकास करना शिक्षा अपना कार्य, उद्देश्य तथा कर्त्तव्य मानती है। वर्तमान समय में शान्ति शिक्षा मानव समाज की प्रमुख आवश्यकता है जिसके अन्तर्गत मानवीय मूल्यों के प्रति निष्ठा, सामाजिक न्याय, राष्ट्रीय एकता, वैज्ञानिक स्वभाव, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वतन्त्रता, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, इत्यादि उत्कृष्ट गुणकारी मूल्यों को रखा गया है। अस्तु मूल्य का क्षेत्र मनुष्य और उसके जीवन एवं अनुभव तक सीमित है। मूल्यों की व्याप्ति हमारे जीवन में आदि से अन्त तक है। भाषिक दृष्टि से जीवन मूल्य के सम्बनध में यह कहा जा सकता है कि जीवन मूल्य एक समस्त पद है जिसमें जीवन तथा मूल्य अलग–अलग दो शब्द है। इन दोनों शब्दों के संयोग से जीवन मूल्य शब्द बनता है। जीवन मूल्य का स्रोत व्यक्ति, परिवार, आचार–विचार, दूसरों के प्रति व्यवहार, जीवन पद्धति राजनीति धर्म आदि है अर्थात मूल्य का कार्यक्षेत्र मनुष्य जीवन तथा मनुष्य समाज है।

हमारी भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत जीवन दर्शन का मूलाधार ही मूल्य है अर्थात् भारत का पौराणिक दर्शन मूल्य दर्शन हैं। ऋत, सत्य, आनन्दतत्व, पुरूषार्थ की कल्पना, वर्णाश्रम व्यवस्था, आदि के माध्यम से जीवन मूल्यों की अवधारणा अभिव्यक्त हुई है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि समय और आवश्यकतानुसार मूल्य सदा परिवर्तनशील है। मूल्य बदलने से जीवन पद्धति बदल जाती है और जीवन पद्धति बदलने से मूल्य भी बदल जाते है। वर्तमान में हमारा देश लोकतंत्रीय मूल्यों का पोषक है। स्वतन्त्रता समानता, भ्रातृत्व, न्याय, समाजवाद और पंथ निरपेक्षता उसका प्राण है किन्तु अमानवीयता अलगाववाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद आदि विघटनकारी शक्तियाँ हमारे लोकतंत्र को कमजोर कर रही है। अतः आवश्यक है कि विश्वबन्धुत्व तथा वसुधैव कुटुम्बकम् जैसे प्राचीन जीवन मूल्यों व लोकतंत्रीय मूल्यों व आदर्शों से अपने मानव जीवन को चरितार्थ करें।

शांति कौशल

प्रायः यह अपेक्षा की जाती है कि विद्यार्थियों में ऐसा कौशल या व्यवहार विकसित किया जाए जो उन्हें प्रभावी शांति निर्माता बना सके। इनका परिचय हम चिंतन कौशल, सम्प्रेषण कौशल और वैयक्तिक कौशल के तहत संक्षिप्त जानकारी के रूप में दे सकते हैं–

चिंतन कौशल

1. तथ्य विचार और आस्था में भेद करने की योग्यता, भेदभाव और पूर्वाग्रह को पहचानना। तर्क या बहस में निहित पूर्व सूचना एवं विषयों और समस्याओं को पहचानना। सही ढंग से तर्क करना, चिन्तन के आलोचनात्मक पक्ष में सुमार है। इसे आलोचनात्मक चिन्तन कहा जाता है।
2. परिकल्पना को आकार देना एवं जाँच की क्षमता होना। हल कहाँ से मिल सकते है और सूचना को कैसे स्वीकार और अस्वीकार किया जाता है यह जानकारी भी रखना, प्रभावी ढंग से साक्ष्यों को आँकना, सर्वाधिक उचित कार्यवाही के लिए सक्षम होने हेतु सम्भावित परिणामों को ऑकने की समझ होना, सूचना प्रबन्ध की श्रेणी में आता है।

3. नूतन समाधान और हल तलाशना, पार्श्विकता से सोचना और समस्याओं को कई परिप्रेक्ष्यों में देखना , रचनात्मक चिन्तन कहा जाता है।
4. समस्या से अलग रहना और उसके मुख्य हिस्सों को समझना; चिंतन प्रक्रिया पर कड़ी नजर रखना और किसी भी समस्या विशेष से निपटने के लिए रणनीति तैयार करने को प्रतिबिम्बन कहा जाता है।
5. एक से अधिक दृष्टिकोण से सोचना; दोनों दृष्टिकोणों को समझना; दूसरे के ज्ञान के आधार पर किसी भी बिन्दु से तर्क देने में सक्षम होना, द्वन्द्वात्मक चिन्तन कहा जाता है।

सम्प्रेषण कौशल

प्रस्तुतीकरणः विचारों को सुस्पष्ट और संगतिपूर्ण ढंग से व्याख्यायित करने में सक्षम होना।

सक्रिय श्रवणताः अन्य के विचारों को ध्यानपूर्वक सुनना, समझना और पहचानना।

समझौतावार्ताः संघर्ष पर विराम लगाने के लिए समझौते की एक उपकरण के रूप में भूमिका और सीमाओं को पहचानना; विवाद हल करने की दिशा में सार्थक संवाद की दिशा में कदम बढ़ाना।

मूक सम्प्रेषणः बॉडी लैंग्वेज के अर्थ और महत्व को पहचानना।

व्यैक्तिक कौशल

सहयोगः साझे उद्देश्य के लिए दूसरों के साथ मिलकर प्रभावी ढंग से काम करना।

अनुकूलनशीलताः तर्क और साक्ष्य की रोशनी में विचार बदलने के लिए इच्छुक होना।

आत्मानुशासनः अपने आचरण को उचित बनाए रखने के लिए और प्रभावकारी ढंग से समय का प्रबन्धन करने की योग्यता।

उत्तरदायित्वः काम का बीड़ा उठाने और उसे ठीक ढंग से पूरा करने की योग्यता, अपने हिस्से के दायित्व का निर्वाह करने को तैयार रहना।

सम्मानः दूसरों को ध्यान से सुनना, निष्पक्षता और समानता के आधार पर निर्णय लेना, इस बात को पहचानना कि दूसरों की आस्था, विचार और दृष्टिकोण आपसे अलग हो सकते हैं।

शान्ति अभिवृत्तियाँ

व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पक्ष उसकी अभिवृत्तियाँ है। अभिवृत्ति वास्तव में एक मनो सामाजिक प्रत्यय है जो विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति के द्वारा किए जाने वाले व्यवहार की प्रवृत्ति को बताता है। विभिन्न वस्तुओं, व्यक्तियों, संस्थाओं, स्थितियों क्रियाकलापों, योजनाओं आदि के प्रति व्यक्ति विशेष के विचार व पूर्वधारणाएँ पाएं ही उस व्यक्ति की अभिवृत्तियों का निर्धारण करते है। अभिवृत्ति धनात्मक/ सकारात्मक भी हो सकती है तथा ऋणात्मक भी। अभिवृत्ति अनुभवों द्वारा विकसित होती है। अभिवृत्ति के विकास में प्रत्यक्षीकरण तथा संवेगात्मक कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा के द्वारा 'शांति अभिवृत्ति', शांत अभिवृत्ति परक प्रवृत्ति/दृष्टिकोण, को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर जोर दिया जाना चाहिए। प्यार, सच्चाई, देखभाल एवं उत्तरदायित्व का भाव, अंहिसा, विनम्रता, सेवाभाव, नेतृत्व, आत्मनियन्त्रण, परिश्रम, दूसरों के प्रति संवेदनशीलता आदि शान्ति के लिए अभिवृत्तिपरक व्यक्तित्व निर्माण के लिए आवश्यक मूल्य है। इसके अलावा शिक्षा के माध्यम से विद्यालयी स्तर पर विद्यार्थियों में निम्नलिखित अभिवृत्तियों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए–

- सहनशीलता
- मानव प्रतिष्ठा और मतभेद के लिए आदर
- लिंग और जाति संवेदनशीलता
- पर्यावरणीय जागरूकता
- देखभाल और सहानुभूति
- निष्पक्ष निर्णय लेना
- सामाजिक जिम्मेदारी एवं जबाबदेही
- आत्मसम्मान
- बदलाव की ओर रूझान (बदलाव के लिए तत्परता)

व्यक्तित्व एवं सामाजिक विकास

व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी भी है और समाज की इकाई भी। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त वह समाज में रहता है। अतः समाज का, समाज की संरचना का और समाज के लोगों का उस पर या उसके व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव पड़ता है। जन्म के तुरन्त बाद शिशु न तो सामाजिक होता है और न असामाजिक। बाद की परिस्थितियों के अनुसार उसमें सामाजिक या असामाजिक व्यवहार विकसित होता है। जब सामाजिक परिस्थिति इस प्रकार की होती है कि शिशु समाज के नियमों तथा नैतिक मानकों को आसानी से सीख लेता है तो यह कहा जाता है कि व्यक्तित्व के सामाजिक पक्ष या पहलू का विकास सम्यक् ढंग से हुआ है। दूसरी तरफ यदि परिस्थिति ऐसी होती है जिससे बालक समाज के नियमों को ठीक ढंग से नहीं सीख पाया तो हम कहते है कि उसमें सामाजिक विकास पूरा नहीं हुआ है अर्थात् उसका सामाजीकरण अधूरा हैं संक्षेप में व्यक्तित्व के सामाजिक विकास के अन्तर्गत तीन प्रक्रियाओं का होना अनिवार्य है–

- बालकों द्वारा सामाजिक रूप से अनुमोदित व्यवहार करना सीखना।
- अनुमोदित सामाजिक भूमिका करना।
- सामाजिक मनोवृत्ति का विकास।

आमतौर पर जीवन के प्रथम 6 साल में ही बच्चों के व्यक्तित्व में सामाजिक या असामाजिक व्यवहार की नींव पड़ती है। इसलिए प्रारम्भिक सामाजिक अनुभूतियों द्वारा ही यह सुनिश्चित हो पाता है कि आगे चलकर बालक का व्यक्तित्व कैसा होगा तथा अपने परिवेश में वह सामाजिक व्यवहार अधिक करेगा या असमाजिक व्यवहार। बालकों में प्रारम्भिक सामाजिक अनुभूतियां मूलतः दो तरह की परिस्थितियों में उत्पन्न होती है– घरेलू परिस्थिति में तथा घर से बाहर जैसे स्कूल, पास–पड़ोस की परिस्थितियों में। घरेलू परिस्थिति में बालक माता–पिता भाई–बहन परिवार के अन्य सदस्यों के साथ अन्तःक्रिया करके विशेष सामाजिक अनुभूतियाँ प्राप्त करता है जिससे उसके द्वारा की जाने वाली अन्तःक्रियाओं का निर्धारण होता है। यदि बालक को मिलने वाली अनुभूतियाँ आनन्ददायक होती है तथा उसमें सन्तोष उत्पन्न करती है तो बालक दूसरों के साथ स्वस्थ्य अन्तःक्रिया करते है तथा इनका सामाजिक समायोजन काफी अच्छा होता है। इसके विपरीत यदि बालक को समुचित स्नेह व संरक्षण प्राप्त नहीं होता है तो उसमें नकारात्मकता का भाव व्याप्त हो जाता है।

स्पष्ट है कि व्यक्तित्व के सामाजिक विकास से तात्पर्य उस प्रक्रिया पक्ष से है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने सामाजिक वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करता है, सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप अपनी आवश्यकताओं व रूचियों पर नियन्त्रण करता है, दूसरों के प्रति अपने उत्तरदायित्व का अनुभव करता है तथा अन्य व्यक्तियों के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से सामाजिक संबंध स्थापित

करता है। सामाजिक विकास के फलस्वरूप व्यक्ति समाज का एक मान्य सहयोगी, उपयोगी तथा कुशल नागरिक बन जाता है। घर परिवार, पड़ोस, मित्र मंडली, विद्यालय, समुदाय, जनसंचार साधन तथा राजनीतिक व सामाजिक संस्थाएं बालक के सामाजिक विकास में, सामाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

उपरोक्त से स्पष्ट है कि सामाजिक विकास मानव जीवन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष है। सामाजिक वातावरण निरन्तर परिवर्तनशील रहता है तथा व्यक्ति को अपने सामाजिक वातावरण में होने वाले परिवर्तनों के अनुरूप बदलना होता है। दूसरों से सहयोग करना, अन्यों के अनुरूप व्यवहार करना, शिष्टता का आचरण एवं सआस्तित्व को स्वीकारना आदि सामाजिक परिपक्वता के लक्षण होते है। बालक के सामाजिक वातावरण को नियन्त्रित करके उन्हें वाछिंत दिशा में सामाजिक विकास के लिए प्रेरित किया जा सकता है। शिक्षा इस कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। सामाजिक अन्तर्क्रिया के फलस्वरूप व्यक्ति समाज के आदर्शों, मूल्यों तथा विश्वासों में आस्था रखना सीखता है एवं समाज हित में अपने निहित स्वार्थों को त्याग करने के लिए तत्पर रहता है। शिक्षा के द्वारा बच्चों के सामाजिक विकास को वांछित दिशा तथा गति दी जा सकती है।

व्यक्तित्व का अर्थ एवं स्वरूप

सामान्य अर्थों में व्यक्तित्व से तात्पर्य शारीरिक गठन, रंगरूप, वेषभूषा, बातचीत के ढंग तथा कार्यव्यवहार जैसे विभिन्न गुणों के समायोजन से लगाया जाता है। व्यक्तित्व शब्द के अंग्रेजी पर्याय पर्सनालिटी का शाब्दिक अर्थ व्यक्ति के वाह्य गुणों या वाह्य आचरण को इंगित करता है। वस्तुतः च्मतेवदंसपजल शब्द लैटिन भाषा के शब्द पर्सोना ;च्मतेवदंद्ध से बना है, जिसका अर्थ नकाब/मुखौटा है। पर्सोना शब्द का अभिप्राय उस पहनावे या वेशभूषा से था, जिसे पहनकर नाटक के पात्र रंगमंच पर किसी अन्य व्यक्ति का अभिनय करते थे। अतः पर्सनालिटी शब्द का शाब्दिक अर्थ व्यक्ति के वाह्य दिखावे मात्र को इंगित करता है। व्यक्तित्व शब्द का यह अर्थ निश्चय ही एक संकुचित अर्थ है।

आलपोर्ट के अनुसार

''व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक गुणों का गतिशील/गत्यात्मक संगठन है, जो वातावरण के साथ उसका अपूर्व समायोजन निर्धारित करते है।'' आलपोर्ट द्वारा प्रस्तुत यह परिभाषा व्यक्तित्व के सम्बन्ध में तीन बातों की ओर संकेत करती है–

- व्यक्तित्व की प्रकृति संगठनात्मक तथा गत्यात्मक है।
- व्यक्तित्व में मनो तथा शारीरिक दोनों प्रकार के गुण समाहित रहते है।
- व्यक्तित्व वातावरण के साथ समायोजन से अभिलक्षित होता है।

आइजेनक के अनुसार

''व्यक्तिगत व्यक्ति के चरित्र, चित्र, प्रकृति, ज्ञानशक्ति तथा शरीर गठन का करीब–करीब एक स्थायी एवं टिकाऊ संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है।''

स्पष्ट है कि वातावरण के साथ व्यक्ति का समायोजन स्थापित करने में उसका व्यक्तित्व महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। वास्तव में वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करने के दौरान ही व्यक्ति के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति होती है। प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के अनुरूप वातावरण के साथ एक अनूठे ढंग से समायोजन करता है। समायोजन का यह अनूठा ढंग ही उस व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिचायक होता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहारों एवं विचारों को क्रियाशील बनाता है एवं निर्देशित करता है। आगेचलकर आलपोर्ट ने भी अपनी व्यक्तित्व सम्बन्धी परिभाषा में संशोधन करते हुए कहा कि व्यक्तित्व केवल वातावरण के साथ समायोजन ही निर्धारित नहीं करता वरन् व्यक्ति की पहचान बताने वाले उसके विशिष्ट व्यवहार एवं विचारों का भी निर्धारण करता है।

व्यक्तित्व की सामाजिकता और शान्ति

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके जीवन का प्रारम्भ समाज में ही होता है तथा जीवनपर्यन्त समाज में रहकर ही वह अपने जीवन की विभिन्न गतिविधियों को सम्पादित करता रहता है। ऐसी स्थिति में मानव समाज के सदस्यों में परस्पर सहयोग तथा अन्तर्क्रिया का होना स्वाभाविक है। समाज के विभिन्न सदस्यों के बीच परस्पर होने वाली सामाजिक अन्तर्क्रिया के निम्नलिखित पाँच आधार हो सकते हैं–

- सहयोग
- प्रतिस्पर्धा
- संघर्ष
- व्यवस्था
- आत्मीकरण

सहयोग, प्रतिस्पर्धा, व्यवस्था, आत्मीकरण वस्तुतः सामाजिक अन्तर्क्रिया के सकारात्मक आधार है जिससे समूह का सामाजिक विकास होता है इसके विपरीत संघर्ष एक नकारात्मक आधार है जिसके परिणाम विघटनात्मक भी हो सकते है। वास्तव में वर्तमान समाज में व्याप्त असन्तोष तथा हिंसा के भाव को देखते हुए शांति शिक्षा को विद्यालय पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण अंग बताते हुए इसमें सामाजिक न्याय, सहिष्णुता मानवीय गरिमा, सांस्कृतिक विविधता जैसे विषयों को शामिल करने की सिफारिश की जा रही है। आज औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा प्रक्रिया के अन्तर्गत हम भावनात्मकता की अनदेखी मानव व्यक्तित्व के भाव पक्ष की उपेक्षा तथा संज्ञानात्मक पक्ष पर विशेष बल देते है। भौतिक तरक्की और मानवीय आधार में असन्तुलन वर्तमान में बढ़ती आसामाजिकता की प्रवृत्ति का मुख्य कारण है। अतः शांति शिक्षा के बालक के द्वारा बालक के व्यक्तित्व के निर्माण में विभन्न सामाजिक गुणों जैसे प्रेम, सहयोग, करूणा, मैत्री, सहिष्णुता आदि के द्वारा, वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का विकास करें। साथ ही नैतिक मूल्यों के साथ–साथ उन मूल्यों और दृष्टिकोण के पोषण पर भी बल देता है जो प्रकृति और मानव जगत के बीच सामंजस्य स्थापित करने के लिए आवश्यक है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक डार्विन ने अस्तित्व के लिए 'जीवन संघर्ष' और 'योग्यतम की उत्तरजीविका' का सिद्धान्त दिया था। आज मानव जैसा सीमित बल का प्राणी किस प्रकार प्रकृति का सबसे शक्तिशाली प्राणी बन गया। क्या मानव के सर्वोच्च तथा शक्तिशाली प्राणी होने में केवल शरीर बल तथा बुद्धि बल का ही योगदान है। अगर ऐसा है तो मानव समाज में बच्चे बुद्ध अक्षम और अशक्त लोग किस प्रकार सुरक्षित और संरक्षित रहते है। इसका कारण है कि शरीर बल और बुद्धि बल के अलावा नीति बल और सामाजिक मर्यादा भी मानव सभ्यता का आधार है। सामाजिक और नैतिक जीवन मानवीय सभ्यता का अभिन्न अंग है जो वातावरण तथा शिक्षा एवं संस्कार से पुष्ट होता है।

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि हम सामाजिक जीवन प्रणाली का अभिन्न अंग है। मानव के लिए आत्मनिर्भर बनने की बात कही गई है लेकिन इसे स्वतः सम्पूर्ण समझने की गलती नहीं करनी चाहिए। हमें एक दूसरे की आवश्यकता है। परस्पर निर्भरता स्वावलम्बन का मानवीय चेहरा है। हम दूसरों से अपने को कैसे जोड़ते है और कैसा व्यवहार करते हैं, यही हमारे व्यक्तित्व को परिभाषित करता है। ऐसे में जरूरत है ऐसी शिक्षा की जो विद्यार्थियों में ऐसे मूल्य और कौशल के बीज बो सके जो उन्हें दूसरों के साथ मिलजुलकर रहना सिखाएँ।

निष्कर्ष

बतौर सारांश यह कहा जा सकता है कि जब कभी संकट की स्थिति उत्पन्न हुई या युद्ध के बादल घिर आए या अकाल व महामारियों का प्रकोप हुआ तो मनुष्य द्वारा शान्ति की कामना की गई। भारतीय समाज में शायद ही कोई धार्मिक विधि ऐसी हो, जिसका प्रारम्भ व अंत शांति के मंत्रों से न होता हो। शान्ति के लिए प्रत्येक व्यक्ति को शान्ति प्राप्त करनी आवश्यक है, यह शान्ति प्राप्ति की आवश्यक व मूलभूत शर्त है। वैसे भारतीय संस्कृति में शान्ति का मुख्य केन्द्र ''व्यक्ति'' है। अगर व्यक्ति शान्ति प्राप्त कर लेंगे, तो ही सामाजिक शांति की स्थापना हो सकेगी। इसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति (मनुष्य) को उन सब अवस्थाओं का त्याग करना पड़ेगा जो शान्ति के विरुद्ध हो। मानव को प्रेम, सत्य, अहिंसा, त्याग, सहयोग, निःस्वार्थ भाईचारा आदि गुणों का विकास करना होगा। ऐसी मानवीय मूल्यों का विकास करके समाज व राष्ट्र में शान्ति लायी जा सकती है। इसमें मानव के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए व्यक्ति का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक विकास हो, इसके लिए समाज में ऐसी व्यवस्था हो जिससे प्रत्येक व्यक्ति को दैनिक आवश्यकताओं की सुविधा उपलब्ध की जाए व किसी प्रकार की हिंसा को स्थान न दिया जाए। इस विकास में महिलाओं को अनदेखा नहीं किया जा सकता। महिलाओं का विकास किए बिना शान्ति को प्राप्त करना असंभव है।

References

1. Arnow J. Teaching Peace: How to Raise Children to Live in Harmony without Fear, without Prejudice, without Violence. New York: The Berkeley Publishing Group, 1995.
2. Aschliman K. Growing toward Peace: Stories from Teachers and Parents about Real Children Learning to Live Peacefully.. Scottsdale, PA: Herald Press, 1993.
3. Bajaj Monisha. Encyclopedia of Peace Education. Charlotte, NC: Information Age Publishing, 1998.
4. Cremin P. 'Promoting education for peace.' In Cremin, P., ed., 1993, Education for Peace. Educational Studies Association of Ireland and the Irish Peace Institute, 1993.
5. Fateem Elham. 'Concepts of peace and violence: focus group discussions on a sample of children, parents, teachers and front-line workers with children'. Cairo: TheNational Center for Children's Culture (Ministry of Culture) and UNICEF, 1993.
6. Fountain S. Education for development: a teacher's resource for global learning. London: Hodder & Stoughton, 1995.
7. Fountain S. 'Peace education/conflict resolution evaluation methods.' New York, UNICEF (unpublished paper), 1998.
8. O'Hare Padraic. Education for Peace and Justice. New York: Harper and Row, 1983.
9. Stomfay-Stitz AM. Peace Education in America, 1828-1990: Sourcebook for Education and Research. Metuchen, NJ: Scarecrow Press, 1983.
10. Weil P. The Art of Living in Peace: Guide to Education for a Culture of Peace. Zurich: UNESCO Publishing, 2003.